दशलक्षण महापर्व
"उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।"
उत्तम क्षमा
उत्तम मार्दव
उत्तम आर्जव
उत्तम शौच
उत्तम सत्य
उत्तम संयम
उत्तम तप
उत्तम त्याग
उत्तम आकिंचन्य
उत्तम ब्रह्मचर्य
Supreme Forgiveness
Supreme Tenderness
Supreme Honesty
Supreme Contentment
Supreme Truthfulness
Supreme Self-restraint
Supreme Austerities
Supreme Renunciation
Supreme Non-attachment
Supreme Chastity
उत्तम क्षमा
Supreme Forgiveness
उत्तम मार्दव
Tenderness or Humility
उत्तम आर्जव
Straight-forwardness or Honesty
उत्तम शौच
Contentment or Purity
उत्तम सत्य
Truthfulness
उत्तम संयम
Self-restraint
उत्तम तप
Penance or Austerities
उत्तम त्याग
Renunciation
उत्तम आकिंचन्य
Non-attachment
उत्तम ब्रह्मचर्य
Chastity or celibacy
धर्म के दशलक्षण
(Ten Virtues)
#DasLakshanParv
#00
#AadhyatmikPrayogshala

Uttama Kshama **- Supreme Forgiveness**

(To observe tolerance whole-heartedly, shunning anger.)

उत्तम क्षमा धर्म

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई ।

Anger makes a man blind and maddens him, for 'when eyes are blood shot, vision is limited'. Overpowered by anger, a man may commit anything right or wrong, and fails to make distinction between proper and improper, truth or untruth, and good or bad.

क्रोध प्राणियों के अंतरंग और बाह्य को अनेक तरह से ऐसा जलाता है कि उसका कोई प्रतिकार नहीं है। अत: क्रोध कोई एक अपूर्व अग्नि है, क्योंकि अग्नि तो बाह्य को ही जलाती है किन्तु यह अन्तरंग को भी जलाता है। जन्म- जन्म में निर्लज्ज होकर अनिष्टों का करने वाला होने से क्रोध कोई एक अपूर्व गृह या भूत है क्योंकि भूत तो एक ही जन्म में अनिष्ट करता है। उस क्रोध का विनाश करने के लिए क्षमा रुपी देवी की आराधना करनी चाहिए जो जिनागम के अर्थ और ज्ञान के उल्लास का कारण है।

- इतना काल बीत जाने पर भी भरत चक्रवर्ती के द्वारा अपने छोटे भाई बाहुबली कुमार पर किये गए क्रोध से अर्जित अपयश लुप्त नहीं हुआ है, बराबर छाया हुआ है।
- इसी लोक में केवल एक बार अपने बड़े भाई कमठ पर वमन किये गए क्रोधरूपी विष ने पार्श्वनाथ के पूर्वभव के जीव मरुभूति को बार बार अत्यंत संतप्त किया।
- द्वीपायन नामक तपस्वी क्रोध से द्वारिका नगरी को जला कर नरक में गया।

जो अपराधियों का तत्काल प्रतीकार करने में समर्थ होते हुए भी उन्हें क्षमा कर देता है, क्षमा रूपी अमृत का सम्यक् सेवन करने वाले साधुजन उसे पाप का नाशक कहते हैं।

- क्षमा के आराधक सन्तो को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv **#01** **#AadhyatmikPrayogshala**

Uttama Mardava – Tenderness or Humility

(To observe the virtue of humility subduing vanity and passions.)

उत्तम मार्दव धर्म

उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे ।

The fools who spend money to earn honor and glory
will after death be born as elephants with their trunks hanging down to the earth.

दैव रुपी शिल्पी द्वारा बनाये गए कुल जाति आदि के उत्कर्ष से होने वाली हर्ष रुपी लहरों के द्वारा भाग्यहीनों का हृदय रुपी समुद्र जीवन पर्यंत भले ही नाना रूप होवे, इससे अपने को पुरुष मानने वालों के किसी भी विषय में “मैं इसमें उत्कृष्ट हूँ” ऐसी सम्भावना होती है, किन्तु खेद है की अपने पुत्र के द्वारा भी मान की हानि देखी जाती है। इसलिए उस ओर प्रवृत्ति करनी चाहिए जहाँ दैव का भी प्रवेश नहीं है। अत: पुरुष को माहात्म्य से भ्रष्ट करने वाले इस मान को धिक्कार है।

- मान से सम्राट भरत के पुत्र अर्ककीर्ति का सब ओर अपयश के साथ अपमान का विस्तार हुआ।
- मान के कारण मणिकेतु नमक देव ने सागर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र-पौत्रों को मायामयी भस्म के रूप में परिणत कर दिया।
- जैसे चक्रवर्ती भरत ने बाहुबली मुनिराज को मानरूपी भूत से छुड़ाया उसी तरह साधु को भी अभिमान के चंगुल में फंसे मनुष्यों को शीघ्र ही छुड़ाना चाहिए तथा मार्दव भावना भाते हुए भरत सम्राट की तरह स्वयं भी इस मान का उच्छेदन करके अभ्युदय-मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए।

यद्यपि अहंकार या अभिमान बुरे हैं किन्तु अहंकार के कारण जो कर्मशत्रु हैं उनको नष्ट करने का संकल्परूप अभिमान बुरा नहीं है, इस प्रकार का संकल्प करके ही साधु अहंकार का मूल से विनाश करने में समर्थ होते हैं।

-ऐसे निर्मान मुनि भगवन्तो को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv **#02** **#AadhyatmikPrayogshala**

Uttama Aarjav **-** Straight-forwardness

(To practice a deceit-free conduct by vanquishing passion of deception.)

उत्तम आर्जव धर्म

उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे ।

The monk, who neither cherishes deceitful thoughts nor does deceitful deeds, nor speaks a deceitful thing; nor conceals his faults, possesses the virtue of straight- forwardness (Aarjava).

जो माया प्रयोजनवश क्रोध आदि के नहीं होते हुए भी क्रोधादि हैं ऐसी प्रतीति कराती है और क्रोध आदि के होते हुए भी क्रोधादि नहीं है ऐसी प्रतीति कराती है। तथा गुणों में भी दोष बुद्धि कराती है और दोषों में भी गुण बुद्धि कराती है। तथा जो अत्यन्त सूक्ष्म भी विचारणीय स्थानों को ढंकती हुई विद्या सम्पन्न बुद्धिमानों को भी भ्रम में डाल देती है; यह सब स्वार्थ की महिमा है, और मायाचार उसका सहायक होता है।

वह संसारव्यापी माया सर्वत्र विजयशील है।

- **संसार मार्ग को बढ़ाने वाली अनन्तानुबन्धी माया ने विष्णु को जो असाधारण कष्ट दिया, जैसा कि लोक में और शास्त्र में कहा है, वह सज्जनों के हृदय और कानों को करौंत की तरह चीरने वाला है।**
- **"अश्वत्थामा मारा गया" इस प्रकार के वचनों से अपने गुरु द्रोणाचार्य को भुलावे में डालने वाले धर्मराज युधिष्ठिर का मुख तत्काल मलिन हो गया और उन्होंने साधुओं से अपना मुंह छिपा लिया ॥**

जो तीनों लोकों को अपने उदर में रखनेवाली अर्थात् तीनों लोकों को जीतने वाली माया के हृदय को भी विदीर्ण कर देते हैं वे सरल स्वभावी उत्साही लोकोत्तर साधु जयशील होते हैं, उनका पद सबसे उत्कृष्ट होता है।

- ऐसे आर्जव धर्म के आराधक सन्तो को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv **#03** **#AadhyatmikPrayogshala**

Uttama Satya – Truthfulness

(To speak affectionate words with a holy intention causing no injury to any living being.)

उत्तम सत्य धर्म

उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।

A truth speaking person is regarded as unique. Like a boat that peddles in the ocean and takes us ashore, truth is the ladder that leads to heaven.

जिसमें द्रव्यरूप से नित्य और स्पष्ट ज्ञान के द्वारा जानने योग्य चराचर जगत के अतीत, अनागत और वर्तमान पर्यायाकार प्रतिबिम्बित होते हैं उस परमब्रह्मस्वरूप होने के लिए जो तत्पर होते हैं उन्हें सन्त कहते हैं। और ऐसे संत पुरुषों में जो उपकारी वचन होता है उसे सत्य कहते हैं। परमागमरूपी समुद्र के पारदर्शी धार्मिक पुरुषों को सदा करुणाबुद्धि से सत्य वचन बोलना चाहिए जबतक कि सुनने के इच्छुक जनों का अज्ञान दूर न हो; क्योंकि घोर अज्ञानरुपी विष से पीड़ित जगत के लिए वह सत्य वचन अद्वितीय उद्बोधक होता है।

- राजा वसु ने गुरुपुत्र पर्वत का पक्ष लेकर अजका अर्थ बकरा ही बतलाया अर्थात् बकरे के मांस से ही यज्ञ करना चाहिए। राजा वसु मर कर नरक गया।
- सत्यघोष असत्य बोलने से बहुत दु:ख को प्राप्त हुआ। तीनों दण्डों को भोगकर वह मरा और तीव्रलोभ के कारण राजा के खजाने में अगन्धन जाति का साँप हुआ। वहाँ भी मरकर दीर्घ संसारी हुआ।

सत्य स्वभावी आत्मा के आश्रय से समस्त प्राणियों को उत्तमसत्य धर्म प्रकट हो और असत्य अभिप्राय को छोड़कर निष्कलंक ध्रुव आत्मतत्त्व के आश्रय से वीतराग परिणति को सभी धारण करें।

- ऐसे उत्तम सत्यधर्म के आराधक सन्तो को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv #04 #AadhyatmikPrayogshala

Uttama Shaucha– Contentment or Purity

(To keep the body, mind and speech pure by discarding greed)

उत्तम शौच धर्म

उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।

Contentment is the cheapest, safest and surest remedy for all troubles that may possibly come upon man. Want of it, only augments, intensifies and prolongs the pain, and sometimes perpetuates it.

आत्मा और शरीर में अभेदज्ञान रूप अविद्या के संस्कार से अपने-अपने विषयों को ग्रहण करने में संलग्न इन्द्रियाँ ही अनादिकाल से मेरे लिए शरण थीं।
अत: परद्रव्य की चाह से मैं किस प्रकार नीचे-नीचे जाता रहा।
अब उत्पन्न हुई शरीर और आत्मा के भेदज्ञानरूप विद्या का सारभूत जो संतोषरूप अमृत है, उसके आस्वाद से मेरा तृष्णारूपी विष दूर हो गया है।
अत: अब वही मैं आत्मा में लीन निर्विकल्प निश्चल ध्यान के द्वारा निरंतर ऊपर-ऊपर विहार करता हूँ।

- अपने अतिथि सत्कार में समस्त लोक के चित्त में आश्चर्य पैदा करने वाले ऋषि जमदग्नि को मारकर उनकी कामधेनु ले जाने वाले राजा कार्तवीर्य को जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने क्रुद्ध होकर सेना और सन्तान के साथ मार डाला। इसपर ग्रंथकार कल्पना करते हैं कि उसको मिला यह दण्ड पर्याप्त नहीं था, मानो इसी से लोभ ने उसे बलपूर्वक नरक में डाल दिया।

जिसके प्रसाद से शुद्धोपयोग में निष्ठ साधुओं को सदा यह चराचर जगत इंद्रजाल के तुल्य भासमान होता है उस भगवती निर्लोभता को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

- ऐसे शौच धर्म के आराधक मुनिवरों को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv #05 #AadhyatmikPrayogshala

Uttama Sanyam **-** Self-restraint

(To defend all living beings with utmost power in a cosmopolitan spirit.)

उत्तम संयम धर्म

उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता ।

A man should not wait for an appropriate time to observe self-restraint. He should not think that he would practice self-restraint at a later stage of life; because death keeps no calendar.

हे अंतरात्मन! मन के दोष और आत्मस्वरूप के विचार में चतुर चेतन! यदि तू भगवान स्वरुप है तो जैसे भ्रमर अथवा मक्खियों के द्वारा पुष्पों से पी-पी कर उगले हुए रस के समान; अथवा जोकों द्वारा घाव में से पी-पी कर पुन: वमन हुए खून के समान, उसी तरह पापमय इन इन्द्रियों के द्वारा अपने-अपने अनुरूप भोग-भोग कर छोड़े हुए इन पाप बंध के कारण, अतएव कुत्सित स्पर्शनादि विषयों को राग-द्वेष बढ़ाते हुए भोगकर क्यों अपने भगवान स्वरुप संग स्वयं का वध करता है !

- जैसे हाथी बनावटी हथिनी के शरीर को स्पर्श के लिए दौड़ता है और पकड़ लिया जाता है।
- इसी तरह वंसी में लगे मांस के लोभ से मछली फँस जाती है।
- भ्रमर कमल का रस लेने में आसक्त होकर सूर्य के डूब जाने पर कमल में ही बंद हो जाता है।
- पतंगे दीपक की ओर दौड़कर जल मरते हैं।
- शिकारी की गीतध्वनि को सुनकर हिरण मारे जाते हैं।

इस तरह प्रत्येक इन्द्रिय मन की प्रभुशक्ति को प्रतिरोपित करती हैं।

चारित्र मोह के उदय से यद्यपि तत्त्वज्ञानी भी भोगों का सेवन करते हैं किन्तु हेय मानते हुए सेवन करते हैं। जब मोह का उदय मंद हो जाता है तो ज्ञान भावना और वैराग्य से इन्द्रियों को वश में करके विरक्त हो जाते हैं।

- ऐसे उत्तम संयम के आराधक मुनिवरों को नमस्कार हो। -

#DasLakshanParv **#06** **#AadhyatmikPrayogshala**

Uttama Tapa - Penance or Austerities

(To practice austerities putting a check on all worldly allurements.)

उत्तम तप धर्म

उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।

Suppression of desires to attain the three jewels is called penance. To discard all desires at heart and become absorbed in the real self in order to conquer the karmas is known as penance.

इन्द्रियों के विषय की अभिलाषा छोड़कर तथा द्रव्यहिंसा और भावहिंसा भी सर्वथा परित्याग करके जो साधु निर्मल तप में उद्यत होकर उसी में लीन होता हुआ उस तप की चरम अवस्था ध्यान को प्राप्त होता है और उसी निर्मल तप में लीन होने से उत्पन्न हुए परमानन्द में रमण करता हुआ प्राणों को छोड़ता है वह साधु स्वर्गलोक और मनुष्य लोक के सुखों को भोगकर अर्थात् जीवन्मुक्ति को प्राप्त करके परम मुक्ति को प्राप्त करता है।

- बड़ा खेद है कि चेतना का चमत्कार मात्र स्वभाव वाले आपने आत्मा से विमुख होकर और शरीरादिक में 'यह मैं हूँ' ऐसा निश्चय करके अनादिकाल से इष्ट विषयों से राग और अनिष्ट विषयों से द्वेष करता आया हूँ। और इसी से पुर्वबद्ध मिथ्यात्व असंयम कषाय और योगरूप चार पौद्गलिक भावों के द्वारा आठ प्रकार के उन प्रसिद्ध ज्ञानावरणादि रूप पौद्गलिक कर्मों का बंध करता आया हूँ। तथा उन मूर्त कर्मों के उदय से उत्पन्न होने वाले अज्ञानमय मिथ्यात्व रागादि भावरूप परिणमन कर-करके इस संसार में आज तक कष्ट उठा रहा हूँ।

तप शब्द की निरुक्ति है मन, इन्द्रियों और कषायों का तपना अर्थात् इन की प्रवृत्तियों को अच्छी तरह से रोकना। और तप का लक्षण है इच्छा को रोकना और उसे रोकने का उद्देश है रत्नत्रय की प्राप्ति।

-ऐसे उत्तम तपधर्म के आराधक सन्तो को नमस्कार हो। -

Uttama Tyaga - Renunciation

(To practice austerities putting a check on all worldly allurements.)

उत्तम त्याग धर्म

उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।

How can rainfall be possible without clouds? How can corn grow without sowing seeds? Likewise, how can the living beings attain bliss without renunciation?

त्याग इस प्रकार जानना: जिन्होंने धन, सम्पदा आदि परिग्रह को कर्म के उदय जनित पराधीन, विनाशीक, अभिमान को उत्पन्न करनेवाला, तृष्णा को बढ़ाने वाला, राग द्वेष की तीव्रता करने वाला, आरंभ की तीव्रता करने वाला, हिंसादि पाँच पापों का मूल जानकर इसे अंगीकार ही नहीं किया वे उत्तम पुरुष धन्य हैं। जिन्होंने इसे अंगीकार करके फिर इसे हलाहल विष समान जानकर जीर्ण तृण की तरह त्याग दिया उनकी भी अचिन्त्य महिमा है।

- त्याग और शौच में यह अन्तर है कि शक्ति के अनुसार अनियत काल तक परिग्रह की निवृत्ति को त्याग कहते हैं। नियत काल तक सब कुछ त्यागने को कायोत्सर्ग कहते हैं। और कर्म के उदय के वश जो अपने पास में नहीं है उसमें होने वाली लालसा को रोकना शौच है। अर्थात् जो हमें प्राप्त नहीं है उस विषय की तृष्णा को रोकना शौच है। और जो हमारे पास है उसे छोड़ना त्याग है।

दुष्ट विकल्पों का त्याग करो, पापों में प्रवृत्ति का त्याग करो, चार कषायों का त्याग करो, विकथा करने का त्याग करो, दूसरों के सत्य व असत्य दोष कभी नहीं कहो। अन्याय का धन ग्रहण करने का दूर से ही त्याग करो।

-ऐसे उत्तम त्यागधर्म के आराधक मुनिवरों को नमस्कार हो-

Uttama Akinchanya - Non-attachment

(To enhance faith in Real Self and to discard internal & external Parigraha)

उत्तम आकिंचन्य धर्म

उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे ।

O Mortal Man! Be non attached, be non attached and be non-attached to all worldly allurements in order to enjoy the true and eternal bliss available in the heavenly abode of the celestial beings .

"अपने ज्ञानदर्शनमय स्वरूप के बिना अन्य किंचिंतमात्र भी मेरा नहीं है, मैं किसी अन्य द्रव्य का नहीं हूँ"- ऐसे अनुभव को आकिंचन्य धर्म कहते हैं।

हे आत्मन् ! अपने आत्मा को देह से भिन्न, ज्ञानमय, अनुपम, स्पर्श-रस-गंध-वर्ण रहित, अपने स्वाधीन ज्ञानानन्द सुख से परिपूर्ण, परम अतीन्द्रिय, भयरहित अनुभव करो। मेरा स्वभाव तो सुख से परिपूर्ण है, परन्तु यहाँ कर्म के आधीन दुखों से व्याप्त हो रहा हूँ। मिथायात्व नाम के कर्म के उदय से अपने स्वरूप के ज्ञान से रहित होकर देहादि पर-द्रव्यों को अपना स्वरूप जानकर अनन्तकाल से मैंने परिभ्रमण किया है।

- परिग्रह सबसे बड़ा पाप है और आकिंचन्य सबसे बड़ा धर्म। जगत में जितनी भी हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील प्रवृत्तियां देखी जाती हैं- उन सबके मूल में परिग्रह है। जब मोह-राग-द्वेष आदि सभी विकारी भाव परिग्रह हैं तो फिर कौन सा पाप बच जाता है, जो परिग्रह की सीमा में न आ जाता हो।
- क्षमा तो क्रोध के अभाव का नाम है, मार्दव मान के, आर्जव माया के तथा शौच लोभ के। पर आकिंचन्यधर्म- क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद- सभी कषायों के अभाव का नाम है। अत: आकिंचन्य सबसे बड़ा धर्म है।

परपदार्थ की छुटने से कोई अपरिग्रही नहीं हो जाता; बल्कि उसके रखने का भा व, उसके प्रति एकत्वबुद्धि या ममत्व परिणाम छोड़ने से परिग्रह छूटता है- आत्मा अपरिग्रही अर्थात् आकिंचन्यधर्म का धनी बनता है।

-ऐसे उत्तम आकिंचन्य धर्म के धारक मुनियों को नमस्कार हो -

#DasLakshanParv **#09** **#AadhyatmikPrayogshala**

Uttama Brahmacarya **-** Chastity or celibacy

(To observe the great vow of Chastity; to have devotion for inner Soul.)

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे।

Defend your soul from the outward sensual pleasures derived through the five senses and maintain the superb virtue of celibacy in the inner self Soul. The abode of celibacy is attained through this plan.

ब्रह्म शब्द का अर्थ है आत्मा या ज्ञान। उसमें प्रवृत्ति का नाम ब्रह्मचर्य है। यद्यपि निजात्मा में लीनता ही ब्रह्मचर्य है; तथापि जबतक हम अपने आत्मा को जानेंगे नहीं, मानेंगे नहीं; तब तक उसमें लीनता कैसे संभव है? इसीलिए कहा भी गया है कि आत्मलीनता अर्थात् सम्यक्चारित्र आत्मज्ञान एवं आत्मश्रद्धान पूर्वक ही होता है। जबतक पाँचों इन्द्रियों के विषयों से प्रवृत्ति नहीं रुकेगी, तबतक आत्मलीनता नहीं होगी और जबतक आत्मलीनता नहीं होगी तबतक पंचेन्द्रियों के विषयों से प्रवृत्ति का रुकना भी संभव नहीं।

- आज मात्र स्पर्शन इन्द्रिय के विषय-सेवन के त्यागरूप व्यवहार ब्रह्मचर्य को ही ब्रह्मचर्य माना जाता है। स्पर्शन इन्द्रिय के भी सम्पूर्ण विषयों के त्याग को नहीं, मात्र एक क्रियाविशेष के त्याग को ही ब्रह्मचर्य कहा जाता है, जबकि स्पर्शन इन्द्रिय का भोग तो अनेक प्रकार से संभव है।
- यदि आत्मलीनता का नाम ब्रह्मचर्य है तो क्या स्पर्शन इन्द्रिय के विषय ही आत्मलीनता में बाधक है, अन्य चार इन्द्रियों के विषय क्या आत्मलीनता में बाधक नहीं हैं? यदि हैं, तो उनके भी त्याग को ब्रह्मचर्य कहा जाना चाहिए।

ब्रह्म शब्द का अर्थ निर्मल ज्ञानस्वरूप आत्मा है। उस आत्मा में लीन होने का नाम ब्रह्मचर्य है। जिस मुनि का मन अपने शरीर से निर्ममत्व हो गया, उसी के वास्तविक ब्रह्मचर्य होता है।

-ऐसे उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के आराधक सन्तो धर्मात्माओं को नमस्कार हो।-

KshamaVani - Forbearance

(To celebrate forgiveness as a festival is a symbol of the growth of spiritual purity.)

क्षमा-वाणी

क्षमा वीरस्य भूषणम् !!!

Forgiveness is a virtue of humility. It is an ornament of social courtesy. Forgiveness is sinless. It is pure. Forgiveness is woodland of peace, where perfect calm prevails and austerities are performed.

उपसर्गों में भी समता धारण किए रहना क्या कायरों का काम है ?
क्षमा कायरता नहीं, क्षमा धारण करना कायरों का काम भी नहीं;
पर वीरता भी तो मात्र दूसरों को मारने का नाम नहीं है,
दूसरों को जीतना ही वस्तविक वीरता है।
अपनी वासनाओं को, कषायों को मारना; विकारों को जीतना ही वास्तविक वीरता है।

O Mortal Man! Ask forgiveness, ask forgiveness & ask forgiveness from all with a feeling

'Welfare of all living beings, and peace and happiness for all creatures'.

Forgiveness is not merely a matter of oratory, it is treasure of the inner Soul as well.
The sweet taste of sucrose can be felt only by the tongue.
But the sweetness of forgiveness lies dormant in the inner Self.

दूसरों से क्षमायाचना करने एवं क्षमा करने के साथ-साथ हम स्वयं को भी क्षमा कर स्वयं में ही जम जाएँ, रम जाएँ और अनन्त शान्ति के सागर निज शुद्धात्मतत्त्व में निमग्न हो अनन्तकाल तक अनन्त आनन्द में मग्न रहें।

- ऐसी क्षमा के धारक सभी सधर्मियों को नमस्कार हो। -

#DasLakshanParv #x0x0 #AadhyatmikPrayogshala

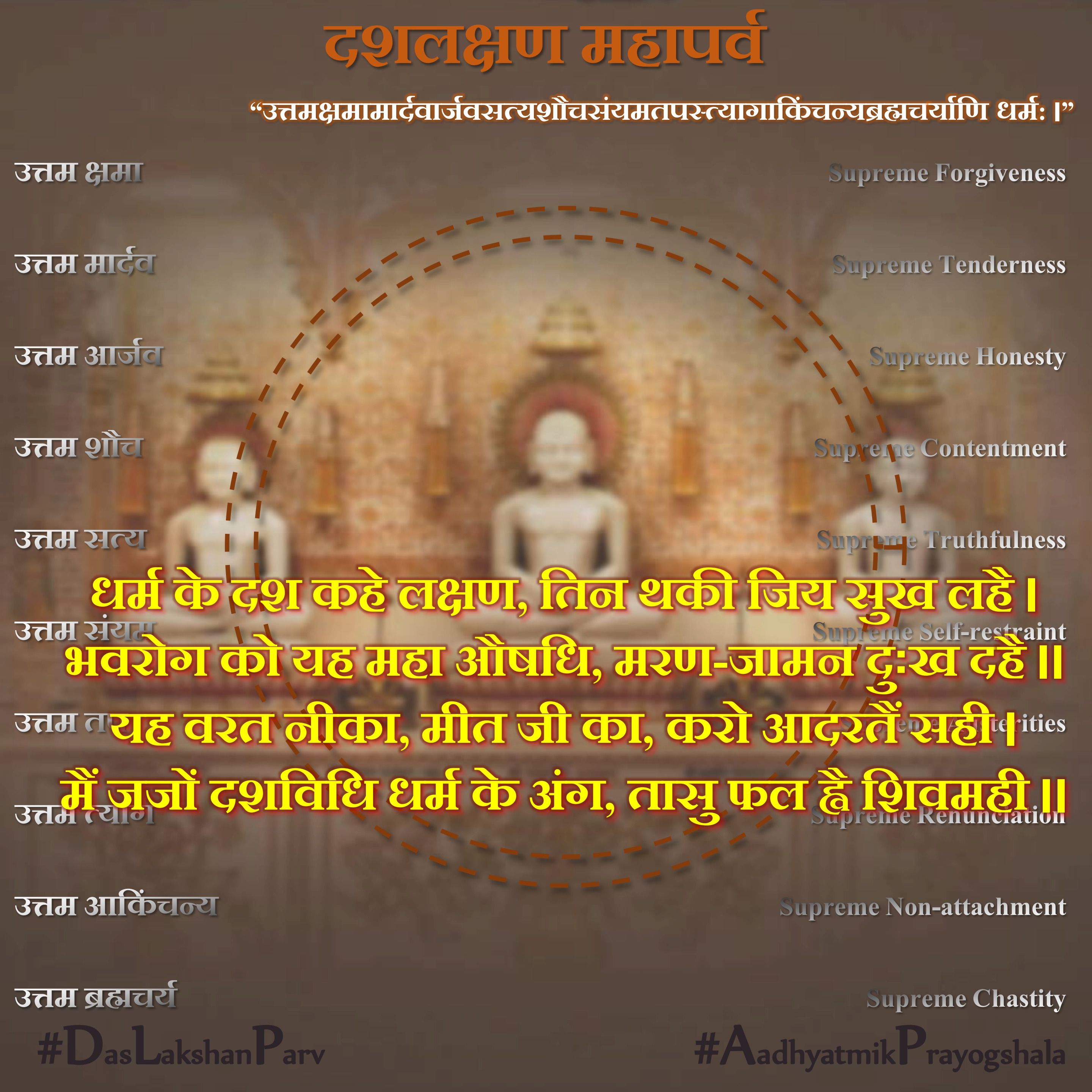
दशलक्षण महापर्व
"उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।"
उत्तम क्षमा
Supreme Forgiveness
उत्तम मार्दव
Supreme Tenderness
उत्तम आर्जव
Supreme Honesty
उत्तम शौच
Supreme Contentment
उत्तम सत्य
Supreme Truthfulness
धर्म के दश कहे लक्षण, तिन थकी जिय सुख लहै ।
भवरोग को यह महा औषधि, मरण-जामन दुःख दहै ।।
यह वरत नीका, मीत जी का, करो आदरतैं सही ।
मैं जजों दशविधि धर्म के अंग, तासु फल है शिवमही ।।
उत्तम संयम
Supreme Self-restraint
Supreme Renunciation
उत्तम आकिंचन्य
Supreme Non-attachment
उत्तम ब्रह्मचर्य
Supreme Chastity
#DasLakshanParv
#AadhyatmikPrayogshala